।। ओ३म् ।।

आर्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष – 94 अंक 2 पृष्ठ 16 मूल्य ₹ 5/- अक्टूबर द्वितीय 21 अक्टूबर से 5 नवम्बर 2020

महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्रतिनिधि गतिविधि

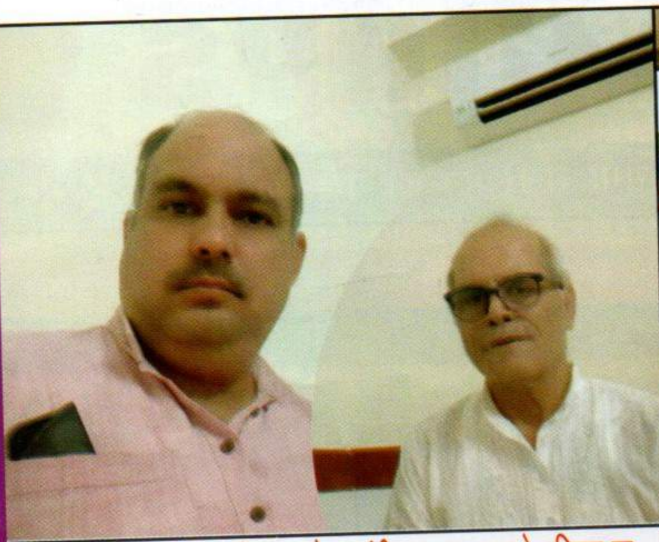

सभा के पदाधिकारी एवं शुद्धि सभा के महामंत्री सुभाष दुआ अपने अभियान पर

सभा के पदाधिकारी आर्य समाज ब्यावर के अधिकारियों के साथ प्रचार कार्य की वार्ता

शुद्धि सभा के महामंत्री सुभाष दुआ का जयपुर हवाई अड्डे पर स्वागत

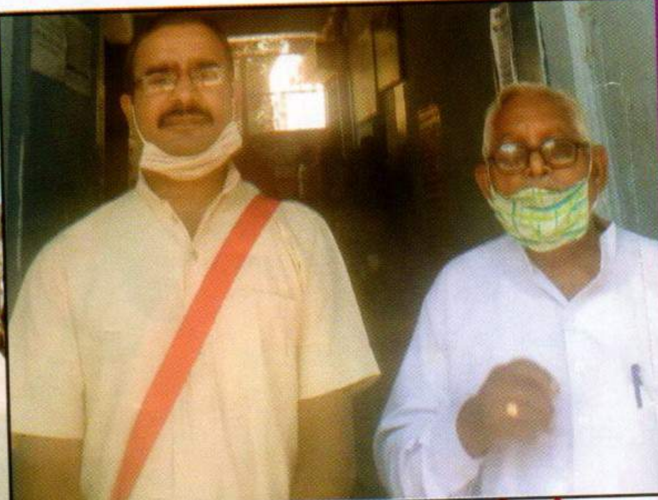

आर्य समाज लाडनू में सभा के पदाधिकारी

आर्य समाज सुजानगढ़ में सभा के पदाधिकारी

आर्य समाज बाकलिया में सभा के पदाधिकारी

ओ३म्

आर्यमार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पंचमी शुल्कपक्ष आश्विन, सम्वत् 2077, कलि सम्वत् 5121, दयानन्दाब्द 196, सृष्टि सम्वत् 01,96,08,53,121

आर. एन. आई नं.10471/60

संरक्षक

1. महाशय धर्मपाल जी (एम. डी. एच.)
2. श्री रमेश गुप्ता (आर्य), अमेरिका
3. श्री दीनदयाल जी गुप्त (डॉलर बनियान)

प्रेरणा स्रोत

1. श्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती
2. श्री विजय सिंह भाटी
3. श्री जगदीश प्रसाद आर्य
4. श्री मदनमोहन आर्य

प्रधान संपादक

श्री देवेन्द्र कुमार शास्त्री

प्रबंन्ध सम्पादक

1. आचार्य रविशंकर आर्य
2. डॉ. सन्दीपन आर्य
3. श्री अशोक शर्मा
4. श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति
5. श्री ओमप्रकाश आर्य रावतभाटा

आर्य मार्तण्ड वार्षिक शुल्क – ₹ 100/-
त्रैमासिक प्रकाशन सहयोगी – ₹ 3100/-
षाण्मासिक प्रकाशन सहयोगी – ₹ 5100/-
वार्षिक प्रकाशन सहयोगी – ₹ 11000/-

प्रकाशक

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान हनुमान ढाबे के पास, राजापार्क, जयपुर –302004

0141-2621879, 9352547258

e-mail : aryamartand@gmail.com

e-mail : arya.sabha1896@gmail.com

अनुक्रम

- सत्यार्थ सुधा 04 – 04
- वेद के ज्ञान की वर्तमान..... 04 – 06
- सम्पूर्ण चिकित्सा 07 – 07
- आर्यजीवन प्रेरक प्रसंग 07 – 08
- हेयंदुःखमनागतम् 08 – 08
- वेदोद्धारक समाज सुधारक.... 09 – 11
- आवश्यक सूचना 12 – 12
- उपवेशन सूचना 12 – 12
- अन्य.... 13 – 14

यूको बैंक

खाता धारक का नाम :- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर

खाता संख्या :- 18830100010430

IFSC Code :- UCBA0001883

सभा को दिया गया दान आयकर की धारा 80G के अंतर्गत करमुक्त है।

आर्य मार्तण्ड पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्याय क्षेत्र जयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी। स्वत्वाधिकारी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान जयपुर की ओर से प्रकाशित, मुद्रक श्री देवेन्द्र कुमार शास्त्री द्वारा वी. के. प्रिन्टर्स सुदर्शनपुरा जयपुर से मुद्रित।

सत्यार्थ सुधा

''परोपकार करना धर्म और परहानि करना अधर्म कहाता है। इसलिए विद्वान् को यथायोग्य व्यवहार करके अज्ञानियों को दुःखसागर से तारने के लिए नौकारूप होना चाहिए। सर्वथा मूर्खो के सदृश कर्म न करने चाहिए, किन्तु जिसमें उनकी और अपनी दिन प्रतिदिन उन्नति हो वैसे कर्म करने उचित है।''

—सत्यार्थ प्रकाश एकादशसमुल्लास

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बहुत सरल शब्दों में धर्म और अधर्म को बताया है कि परोपकार करना धर्म और परहानि करना अधर्म है। परोपकार =पर+उपकार, परहानि=पर+हानि। इन दोनों शब्दों में 'पर' शब्द ध्यान देने योग्य है। इसका अर्थ है— दूसरा। उपकार और हानि का सम्बन्ध आत्मा के साथ है। जहाँ उपकार से एक आत्मा को सुख मिलेगा वहीं हानि से दूसरे आत्मा को कष्ट पहुँचेगा। सुख पहुँचाना ईश्वर की आज्ञा का पालन करना है और दुःख पहुँचाना ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करना हैं मनुष्य को सुख पहुँचाने की प्रेरणा कौन देगा? निश्चित् रूप से यह प्रेरणा समाज को दिशा देने वाले विद्वान् लोगों की है। इसीलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने विद्वानों को नौकारूप बताया है। वे नौका का काम करें। विद्वानों के अमृतोपदेश से जीवन बदल जाता है। न जाने कितने अज्ञानियों और अधर्मियों का जीवन विद्वानों के सदुपदेश से बदला है। विद्वान् विद्या का प्रकाश करते हैं और उसी प्रकार से आमजन को जीवन का सत्यमार्ग मिलता है। इसलिए स्वामी जी ने उनको आगाह किया है कि वे सदैव कर्म का विश्लेषण— आत्मचिन्तन करते रहें जिससे उनके द्वारा कोई अनुचित कर्म कभी न होवे। सत्कर्म से उनकी स्वयं की उन्नति होगी और अन्य सामान्य जनों की भी।

वेद के ज्ञान की वर्तमान समय में प्रासंगिकता

आज पूरा विश्व कोरोना महामारी से जूझ रहा है। लाखों लोग अपनी जान गवाँ चुके हैं। लाखों लोग इसके संक्रमण की चपेट में हैं। विकसित और अविकसित सभी देश इसके आगे घुटने टेक दिए हैं। पूरे विश्व में तबाही मची हुई है। इस भयंकर महामारी के वक्त हम अपने वेद के ज्ञान की प्रासंगिकता पर विचार करें। कहीं हम वेद के कहे से उल्टे कार्य तो नहीं कर रहे हैं। सीधी दिशा में जाने के बजाय कहीं उल्टी दिशा में बहे तो नहीं जा रहे हैं या हमने उस ओर ध्यान नहीं दिया अथवा उसकी आवश्यकता ही नहीं समझी।

वेद और विज्ञान एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। वेद अपने आप में एक विज्ञान है। यह विज्ञान की कभी अवहेलना नहीं करता, किन्तु वह वेदानुकूल हो। वेद में कहा है—द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिराप; शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। यजु. 36/17 पदार्थ— ''हे मनुष्यो! जो शान्तिः द्यौः=प्रकाशयुक्त पदार्थ शान्तिकारक, अन्तरिक्षम्=दोनों लोक के बीच का आकाश, शान्तिः= शान्तिकारी, पृथिवी= भूमि, शान्तिः=सुखकारी निरुपद्रव, आपः= जल वा प्राण, शान्ति=शान्तिदायी, ओषधयः= सोमलता आदि औषधियाँ, शान्तिः= सुखदायी वनस्पतयः= वट आदि वनस्पति, शान्तिः= शान्तिकारक, विश्वे देवाः=सब विद्वान् लोग, शान्तिः= उपद्रवनिवारक, ब्रह्म= परमेश्वर वा वेद, शान्तिः= सुखदायी, सर्वम्= सम्पूर्ण वस्तु, शान्तिरेव= शान्ति ही, शान्तिः= शान्ति, मा= मुझ को, एधि= प्राप्त होवे, सा= वह, शान्तिः= शान्ति तुम लोगों के लिए भी प्राप्त होवे।'' भावार्थ—'' हे मनुष्यो! जैसे प्रकाश आदि पदार्थ शान्ति करने वाले होवें, वैसे तुम लोग प्रयत्न करो।''

इस मंत्र में द्यौ, अन्तरिक्ष, पृथिवी, आप, औषधियाँ, वनस्पतियाँ, विश्वदेव, ब्रह्म, अन्य समस्त पदार्थ शान्ति प्रदान करने वाले होवें— ऐसी प्रार्थना की गई है। द्यौ अर्थात् प्रकाशयुक्त लोक जैसे सूर्य जो हमारे सौरमंडल का आधार है। उससे शान्ति की

कामना है। अन्तरिक्ष जिसमें हमारी पृथिवी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा कर रही है। वह आकाशीय क्षेत्र शान्तिदायक होना चाहिए। पृथिवी जिस पर हम सब जीवन धारण कर रहे हैं और जिसके ऊपर नदी, समुद्र, वन, पर्वत, पशु–पक्षी, वायु, जल, प्राणी निवास करते हैं उससे जुड़े हुए हैं। पृथिवी कहने का तात्पर्य है पृथ्वी का एक–एक तत्व। सब शान्तिदायक हों। औषधियाँ, वृक्ष वनस्पतियों युक्त जंगल शान्तिदायक हों। विश्वेदेव अर्थात् विद्वान् जन शान्ति प्रदान करने वाले हों। ब्रह्म अर्थात् हम जिसकी उपासना कर रहे हैं वह शान्ति प्रदान करे। इसके अतिरिक्त अन्य सारे पदार्थ हमें शान्ति प्रदान करें।

इसको उदाहरण के रूप में इस प्रकार समझें– आपके सामने थाली में भोजन रखा हुआ है। आप खाने के लिए बैठे हैं। प्रार्थना कर रहे हैं कि यह भोजन हमें शान्ति प्रदान करे। क्या आपके कथन मात्र से भोजन शान्ति प्रदान कर देगा? उत्तर है– नहीं। शान्ति के लिए अर्थात् क्षुधा मिटाने के लिए भोजन करना पड़ेगा। यदि आपने भूख से थोड़ा कम भोजन किया तो वह भोजन अमृत का काम करेगा। यदि आपने अधिक भोजन कर लिया तो वह अजीर्ण हो जाएगा और रोगोत्पादक सिद्ध होगा। अधिक होने पर वमन होना भी संभव है। हमें अपने शरीर की अनुकूलता को ध्यान में रखकर भोजन करना होगा तभी वह हमें शान्तिदायक होगा। भोजन के साथ जिह्वास्वाद में अति सर्वथा त्याज्य है अन्यथा वह प्रकृति के विरुद्ध होगा और उसका दुष्परिणाम होगा नाना प्रकार के रोग। कुछ ऐसी ही बात वेद भगवान ने इस शांतिमंत्र में प्रदान की है। स्यात् इस पर चिन्तन–मनन करें।

हम इस पृथिवी का उपयोग अति के रूप में स्वादु भोजन के समान अधिक खाकर अजीर्णता तो नहीं उत्पन्न कर रहे हैं। यदि ऐसा है तो वह जीवन में विकृति पैदा करेगी जिसका परिणाम होगा दुःख। यह पृथिवी शान्तिकारक हो– यह एक ऐसा संकेत है जो भोजन करने वाले के साथ घटित हो रहा है। भूख से कम भोजन अमृत और भूख से ज्यादा भोजन विष। इस पृथिवी का एक निश्चित् सुख में उपयोग शान्तिकारक और अति रूप में उपभोग कष्टदायक होगा। क्या हमने इसका ज्यादा उपयोग करके अजीर्णावस्था को तो नहीं प्राप्त कर लिया है। जल, वायु, वृक्ष, वनस्पतियाँ, भूमि, जीव–जन्तु के साथ अति का व्यवहार तो नहीं किया है। अवश्य कहीं न कहीं भूल हुई है। सुख साधनों की अधिक लालसा में मानव द्वारा कुठाराघात किया गया है। सुख–सुविधा रूपी भूख मिटाने के लिए हमने अधिक खा लिया है परिणाम सामने आ चुका है। वेद कभी भी विज्ञान का विरोधी नहीं रहा है। वेद और विज्ञान दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। हम विज्ञान के साथ वेद को भूलें नहीं। वेद कह तो कुछ रहा है और विज्ञान करता कुछ अलग चला आ रहा है। उस पर ध्यान ही नहीं दे रहा है। हमें वेद की बातों पर ध्यान देना होगा तभी विज्ञान सुखदायी हो सकेगा। वेद की आज्ञा न मानकर मानव ने पृथिवी का विनाश किया है। पृथिवी हमें शान्ति कैसे प्रदान करेगी? वायु में रात–दिन घुलता जहर, नदियों–समुद्रों की स्वच्छता नष्ट, वन–जंगल साफ, भूमि में रासायनिक पदार्थ का प्रयोग, जीव–जन्तुओं–पक्षियों का सफाया, आए दिन आतिशबाजी–पटाखों के द्वारा अन्तरिक्ष की छाती छलनी करना। यह कटु सत्य है। इसे नकारा नहीं जा सकता। मनुष्य के हाथों तड़पकर मरते जानवर, पक्षी व अन्य जीव प्रकृति की शान्ति में क्रन्दन भर रहे हैं। उनका वह करुणक्रन्दन मनुष्य को क्या प्रदान करेगा, भगवान जाने। यह वेद की आज्ञा का खुला उल्लंघन है।

वेदमंत्र का भावार्थ कह रहा है– "हे मनुष्यों! जैसे प्रकाश आदि पदार्थ शान्ति करने वाले होवें; वैसे तुम लोग प्रयत्न करो।" कोई भी पदार्थ शान्ति तभी प्रदान कर सकता है जब वह अपने वास्तविक रूप में रहेगा। विकृत होने पर वह दुःख ही पहुँचायेगा। हम पृथ्वी की शान्ति के लिए जितना प्रयत्न कर रहे हैं। यह बहुत ही विचारणीय बिन्दु है। सुख–सुविधा का उपयोग तो कर रहे हैं किन्तु उसकी स्वच्छता का बिल्कुल भी ध्यान नहीं है। बेहिसाब प्राकृतिक संसाधनों का भोग सारी दुनिया में हो रहा है। यह सब वेद की आज्ञा के विपरीत है। हम आकाश में आतिशबाजी का नजारा देखकर

खुश होते हैं किन्तु क्या ऐसा करना अन्तरिक्ष के लिए अनुकूल होगा? कदापि नहीं। शान्त अन्तरिक्ष के वातावरण को द्रीव ध्वनि वाले पटाखे छोड़कर ध्वनि प्रदूषण फैलाकर वेद की आज्ञा का उल्लंघन नहीं तो और क्या है? प्रकृति का स्वभाव स्वच्छता ही ग्रहण करने वाला है। वह दूषित पदार्थ बर्दाश्त कर ही नहीं सकती और हम जबरदस्ती उसे प्रदूषण से भर रहे हैं। उसकी शांति भंग कर रहे हैं। विष सोखने वाले वृक्ष–वनस्पतियों, जंगलों का बेरहमी से सफाया करते जा रहे हैं। प्रकृति बदला नहीं लेगी तो और क्या करेगी।

वेद कह रहा है कि प्रकाश आदि पदार्थ शान्ति करने वाले होवें वैसा तुम प्रयत्न करो। इसमें यह भाव छिपा हुआ है कि इनमें अशान्तिकारक तत्त्व भी मौजूद हैं। हमें यह सदैव ध्यान रखना होगा कि ये अशान्त अर्थात् कुपित न होने पावें।

विश्वेदेवाः अर्थात् विद्वान भी शांति प्रदान करने वाले होने चाहिए। यहाँ विद्वान से तात्पर्य वैज्ञानिक और बुद्धिजीवी लोगों से है। दुनिया में आज जाने कितने घातक हथियार बन रहे हैं उन घातक हथियारों का प्रयोग कहाँ होगा और किसलिए होगा? यह चिन्तनीय विषय हैं। विद्वानजन संहार को जन्म दे रहे हैं तो इस पृथिवी पर कैसे शान्ति स्थापित हो सकेगी? यह वेद की आज्ञा का उल्लंघन है। वास्तव में विश्व का कल्याण केवल और केवल वेदों की आज्ञापालन करने से होगा, दूसरा कोई विकल्प नहीं हो सकता। कारण यह है कि वेद परमात्मा की वाणी है। वेद इस अखिल धरा का संविधान है। मानव के सुखशान्ति का संदेशवाहक है। दुनिया को वेद की बात माननी पड़ेगी, तभी स्थायी शान्ति स्थापित हो सकेगी।

विकास के नाम पर प्रकृति का विनाश करके मनुष्य शान्ति से नहीं रह सकता। वेद कह रहा है कि प्रकाश आदि पदार्थ अशांत न होने पावें– ऐसा सबको प्रयत्न करना चाहिए। आज इसका बिल्कुल ही ध्यान नहीं रहा। वे अशांत होकर क्या करेंगे? इसे कोई नहीं बता सकता, केवल दुःख ही दुःख भोगना पड़ेगा। सारा संसार अर्थलिप्सा में दौड़ लगा रहा है। वेद की आज्ञा के विपरीत कार्य कर रहा है। वेद भगवान तो मंत्र बोलकर भोजन को ईश्वर का प्रसाद मानकर ग्रहण करने पर बल देता है जबकि आज भोजन ने एक व्यापार का रूप धारण कर लिया है। हम कहाँ भागे जा रहे है और क्या कर रहे हैं? कोई ध्यान नहीं। जीवन धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के लिए है। आज केवल काम ही रह गया है। बच्चों का एक पतंग भी व्यापार के रूप में अर्थग्रहण के रूप में दृष्टिगोचर हो रहा है। आगे क्या होगा? भगवान जाने। वेद की जीवन–शैली आकाशीय नहीं अपितु धरातलीय है जबकि पाश्चात्य सभ्यता केवल आकाशीय है उसको धरातल से कोई लेना देना नहीं।

अपना देश वेद के आधार पर विश्वगुरु था। श्रेष्ठ और चरित्रवान होने के कारण यहाँ के लोग देवी–देवता कहे जाते थे। उनका जीवन ऋषि–मुनियों से संचालित प्रेरित होता था और ऋषि–मुनियों को वेद से प्रेरणा लेनी पड़ती थी। सब एक दूसरे से पवित्र भावनाओं से जुड़े हुए थे। इसी कारण पृथ्वी हमारे लिए शान्तिदायक थी। हम इसके पुत्र–पुत्रियाँ थे। सबको शान्ति के साथ जीने देते थे।

शान्तिकरणम् के सारे मंत्रों में कुछ इसी प्रकार की प्रार्थना की गई है। नदी, पर्वत, वृक्ष, वनस्पतियाँ, बादल, पशु–पक्षी, समुद्र, बिजली, विद्वानजन, कुएँ, सरोवर, अन्तरिक्ष, वायु, जल, पृथ्वी, दिशाएँ, औषधियाँ, सूर्य, चन्द्र, पत्थर, गाएँ, नौका, वर्षा, अन्न, मन सबको शान्तिदायक रहने की परमात्मा से कामना की गई है। हमें वेद की आज्ञा का पालन करना होगा, तभी हम इस धरती पर शान्ति के साथ रह सकेंगे। इन प्राकृतिक तत्त्वों को बिगाड़ने से हमारा भला नहीं हो सकेगा। हम इसके साथ छेड़छाड़ न करें। जीव–जन्तुओं, पशु–पक्षियों को भी जीने दें। तभी प्रकृति में सन्तुलन बना रह सकता है। प्रकृति–विरोधी कार्य विनाश को ही जन्म देता है। अतएव वेद की प्रासंगिकता सदैव सब कालों में बनी रहेगी।

ओमप्रकाश आर्य

आर्य समाज रावतभाटा

सम्पूर्ण चिकित्सा (HOLISTIC SYSTEM)

संस्कृत उक्ति है– 'सर्वम् अन्यत् परित्यज्य शरीरम् अनुपालयेत्।'

शरीर की रक्षा करना मनुष्य का सर्वप्रथम कर्त्तव्य है। स्वास्थ्य उन्नति की अनिवार्य सीढ़ी है। स्वास्थ्य प्रकृति के मार्ग पर ही चलकर प्राप्त किया जा सकता है– कथन सर्वमान्य है। प्रकृति से विमुख होकर न हम स्वस्थ रह सकते हैं, न प्रसन्न तथा न ही किसी भी क्षेत्र में प्रगति कर सकते हैं। यहाँ प्रकृति से तात्पर्य है– प्रकृति द्वारा निर्धारित नियमपालन से। प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व जागना, प्रातः एक डेढ़ गिलास पानी पीना, तत्पश्चात् शौच जाना। यहाँ शौच शब्द शुचिता और पवित्रता का वाचक है। अग्रेजी में शौच को Fresh होना कहा जाता है। यह Fresh होना ही शरीर को विषैले तत्वों से मुक्त करता है। इस क्रिया का ठीक प्रकार से निष्पादन न होना ही सभी रोगों का मूल कारण है। प्रातः की शुद्ध वायु भ्रमण, व्यायाम, सादा जीवन उच्च विचार, प्रकृति से प्राप्त फलों और सब्जियों और अनाज का उनक

प्राकृतिक स्वरूप को संरक्षित रखते हुए उपयोग, उचित निद्रा तथा संक्षिप्त रूप में उचित आहार, उचित विहार एवं उचित विचार का पालन करना प्रकृति के मार्ग पर चलना है। प्रकृति का राजमार्ग यहीं से प्रारम्भ होता है।

स्वास्थ्य का एक बड़ा रहस्य है, जिसे केवल प्राकृतिक चिकित्सा ने उद्‌घाटित किया है। मनुष्य का रक्त 80 प्रतिशत क्षारीय है 20 प्रतिशत अम्लीय। रक्त का यह क्षारीय अम्लीय अनुपात स्वस्थ रहने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इस स्थिति को नियन्त्रण में रखने के लिए आवश्यक है कि प्रातःकाल गुनगुने पानी में नींबू का रस और 1–2 चम्मच शहद मिलाकर पिएँ अथवा सन्तरे, मौसम्मी जैसे नींबू प्रजाति के फलों का सेवन करें। रक्त की उपर्युक्त लाभ की स्थिति पर स्वास्थ्य बिगड़ता ही जाता है, इसी का परिणाम है सम्पूर्ण भारतीय परिवारों का रोगग्रस्त होना।

प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली सम्पूर्ण चिकित्सा पद्धति है। (HOLISTIC SYSTEM) शरीर में विद्यमान सभी रोगों की चिकित्सा की सफलतम प्रणाली है।

—डा. देवेन्द्र कुमार
भीलवाड़ा

आर्यजीवन प्रेरक प्रसंग....

ईश्वर ने रक्षा की श्रीकृष्ण साधक उप जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान थे।

बात जुलाई सन् 1939 की है। श्रीकृष्ण साधक कोटा जो एक हेडमास्टर थे। रटलाई में आपकी नियुक्ति को मात्र डेढ़ माह हुआ कि आपका स्थानान्तरण अकलेरा हो गया। आपको अकलेरा आने की सूचना मिली।

वर्षा ऋतु थी। आकाश में घनघोर बादल छाए हुए थे। ऐसे समय में आपको रटलाई से अकलेरा अपने परिवार एवं सामान के साथ जाना था। उन दिनों बसें नहीं चलती थीं। रटलाई से अकलेरा जाने के लिए दो रास्ते थे। एक रास्ता बड़ा भयानक था। पहाड़ी मार्ग था और घनघोर जंगल पड़ता था जिसमें हिंसक जानवरों तथा डाकुओं का भी डर था। यह रास्ता छोटा था, केवल आठ मील चलने पर आमेठा में पक्की सड़क से जा मिलता था। दूसरा रास्ता असनावर होकर जाता था, बहुत लम्बा था, किन्तु कोई खतरा नहीं था। रटलाई के लोगों ने आपको इसी लम्बे रास्ते से जाने की सलाह दी, किन्तु आप ईश्वर पर विश्वास रखने वाले व्यक्ति थे। अतः आपने छोटे पहाड़ी रास्ते से जाने का निश्चय किया। एक बैलगाड़ी किराये पर ली और उसमें सामान लाद दिया। उन दिनों रटलाई में पुलिस चौकी थी जिसमें एक हेड कांस्टेबल व बंदूकधारी चार सिपाही रहते थे। हैड कांस्टेबल साहब एक मुस्लिम सज्जन थे, जिनका लड़का रटलाई स्कूल में पढ़ता था। जब उन्हें आपके उस भयानक रास्ते से जाने का समाचार मिला तो दो सिपाहियों को मयबंदूक के उन्होंने आपके साथ कर दिया और उन्हें आदेश दिया कि

मास्टर साहब को आमेठा तक पहुँचाकर ही लौटना।

मध्याह्न का समय था। आकाश में बादल छाए हुए थे। कुछ–कुछ बूँदा–बाँदी भी हो रही थी। आपकी बैलगाड़ी ऊँचे–नीचे पहाड़ी रास्तों पर उठती–पड़ती धीरे–धीरे चल रही थी कि उस घनघोर जंगल में एक सन्नाटा सा छा गया। हिरण, खरगोश आदि जानवर इधर–उधर भागने लगे। दोनों सिपाही कहीं चले गए और गाड़ीवाला भी गाड़ी से कूदकर यह कहता हुआ भाग गया कि वह देखो सामने शेर आ रहा है। साधक जी ने थोड़ी दूर पर यमराज के उस भयंकर दूत को देखा और मन में गायत्री पाठ करते हुए पत्नी तथा बच्चों को कम्बल ओढ़ाकर गाड़ी में ही लिटा दिया। आप स्वयं भी एक चादर ओढ़कर दुबक गये और गायत्री मंत्र जपने लगे। ईश्वर की कृपा से कुछ ही देर बाद सिपाही भी लौट आए। गाड़ीवाला भी आ गया। शेर जंगल में न जाने किधर चला गया था। आपने ईश्वर को बहुत–बहुत धन्यवाद दिया। इसके बाद चलते–चलते आप लोग सायंकाल चार बजे आमेठा पहुँच गए।

(नोट– श्रीकृष्ण साधक की जीवनी 84 पृष्ठों में छपी है। बहुत ही प्रेरणाप्रद जीवनचरित्र है।)

—ओमप्रकाश आर्य

हेयंदुःखमनागतम्

पतंजलि योग दर्शन 2/16 में कहा गया है– ''हेयदुःखमनागतम्'' अर्थात् जो दुःख अभी आया नहीं है, उसे टाला जा सकता है। अवस्था भेद से कर्मो के तीन भेद होते हैं– संचित कर्म, प्रारब्ध कर्म एवं क्रियामाण कर्म। पूर्वजन्मों के जिन कर्मो को भोगने की बारी नहीं आई है वे संचित कर्म हैं। यह योनि, आयु एवं भोग जिनके कारण मिला है वे प्रारब्ध कर्म हैं। जिन नए कर्मों का हम अपने कार्यों व विचारों से संग्रह कर रहे हैं वे क्रियमाण कर्म कहलाते हैं।

जो कर्म हो चुके हैं यानि संचित कर्म उन पर हमारा नियंत्रण नहीं हैं हम केवल उन कर्मो के फल की प्राप्ति या समाप्ति की प्रतीक्षा कर सकते हैं। उनके फलों को हमें साहस और धैर्य के साथ भोगना ही होगा, परन्तु जो कर्म हम अब करने वाले हैं और उनका जो फल आने वाला है, सुख या दुःख उससे हम बच सकते हैं, या उन्हें नियंत्रित कर सकते हैं। अविद्या दोष ही कर्मफल उत्पन्न होने का मूल कारण हैं। इसी अविद्या रूपी मूल से उत्पन्न कर्मवृक्ष में जाति, आयु व सुख–दुःख रूपी भोग के फल लगते हैं। जब तक अविद्या की जड़ है तब तक कर्मवृक्ष फलेगा। अविद्या रूपी जड़ के कट जाने से ही कर्मफल की निवृत्ति होती हैं। इसके लिये हम इदन्नमम का भाव मन में रखकर ईश्वर प्रणिधान करते हुए बिना फल की इच्छा किये कर्तव्यभाव से कर्म करेंगे तो कर्मफल बनेगा ही नहीं। फल की इच्छा रखने से फल प्राप्त होता ही है। इसलिये हम सुख–दुःख की भावना से हटकर, राग–द्वेष के बिना काम, क्रोध, लोभ, मोह के आवेग से बचकर निष्काम भाव से कर्म करते जाएँ।

स्वाध्याय एवं ईश्वर प्रणिधान क्रियायोग हैं जिसका प्रयोजन है कि हम समाधि की भावना जगाएँ। चित्तवृत्तियों को त्यागकर चित्त का शुद्ध स्वरूप जो कि सत्वज्ञान स्वभाव वाला है, में स्थित हो जाना ही चित्तवृत्ति निरोध है। सत्व चित्त में रजोगुण बढ़ने पर वह ऐश्वर्य प्रिय हो जाता हैं। इसी प्रकार चित्त में रजोगुण बढ़ने से वह अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य और अनैश्वर्य को प्राप्त होता हैं। हमारे कर्म व विचारों से कुछ वृत्तियाँ विकसित होती हैं जो भविष्य में उचित समय पर फलेंगी। इसलिये हमें सदैव सात्विक वृत्तियों को अपनाने का प्रयत्न करते रहना चाहिये। अच्छे कर्मों का फल निश्चय ही अच्छा होता है लेकिन अच्छे की कामना भी संसार से बाँधने वाली होती हैं। भौतिक सुख अस्थाई होते हैं। सच्चा आनंद सुख और दुःख की भावना से हटकर प्रभु से एकाकार होने में ही है। यही सच्चा योग हैं।

(1–योनि/जाति– वृक्ष–वनस्पति, पशु–पक्षी एवं मानव, 2– आयु = जीवनकाल

– रमेश चन्द्र भाट, कोषाध्यक्ष,

– आर्य समाज रावतभाटा,

"वेदोद्धारक, समाज सुधारक तथा आजादी के मंत्रदाता ऋषि दयानन्द"

विश्व का धार्मिक जगत ऋषि दयानन्द का ऋणी है। उन्होंने विश्व को सद्धर्म का विचार दिया था। ऐसे सद्धर्म की पूरी योजना एवं प्रारूप भी उन्होंने अपने ग्रन्थों तथा विचारों में प्रस्तुत किया है। उन्होंने बतया था कि मत–मतान्तर एवं सत्य धर्म में अन्तर होता है। मत–मतान्तर धर्म नहीं अपितु अविद्या एवं सत्यासत्य से युक्त मत, पन्थ एवं सम्प्रदाय होते हैं। सत्यधर्म तो वही होता है जो ईश्वर प्रदत्त ज्ञान से आरम्भ होकर सृष्टि की प्रलय तक विद्यमान रहता है तथा प्रायः अपरिवर्तनीय रहता है। ऐसा धर्म, धर्मग्रन्थ एवं मत केवल वेद एवं वैदिक धर्म ही हैं। वेदों की उत्पत्ति पर भी ऋषि दयानन्द ने विचार किया, उसकी खोज की थी और इससे प्राप्त तथ्यों को उन्होंने अपने व्याख्यानों तथा सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों में प्रस्तुत कर मानवजाति का उपकार किया है। मत–मतान्तरों के ग्रन्थों और वेद में मौलिक अन्तर यह है कि मत–मतान्तरों के सभी ग्रन्थ मनुष्यों के द्वारा रचित, प्रकाशित एवं प्रचारित हैं जबकि वेद सृष्टि के रचयिता, पालक, संहारक सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अनादि, नित्य, अविनाशी परमात्मा द्वारा अमैथुनी सृष्टि में उसके द्वारा उत्पन्न चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा को प्रदत्त ज्ञान है।

परमात्मा सर्वव्यापक एवं सर्वान्तर्यामी होने के कारण सभी जीवों के भीतर एवं बाहर विद्यमान है। ज्ञानवान् एवं सर्वशक्तिमान होने के कारण वह पूर्वकल्पों की तरह अपने नित्य ज्ञान वेदों का ऋषियों की आत्माओं में प्रेरणा के द्वारा प्रकाश करता है। वेदों के द्वारा परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में, जब वर्तमान का कोई मत–मतान्तर नहीं था, धर्म एवं अधर्म, पाप एवं पुण्य, शुभ कर्म एवं अशुभ कर्मों, कर्तव्य तथा अकर्तव्यों सहित सत्य ज्ञान एवं शिक्षाओं के दान के लिये मनुष्यों को चार वेदों का ज्ञान दिया था। महाभारत युद्ध तक के 1 अरब 96 करोड़ वर्षों तक सारी सृष्टि पर वेदों की ही शिक्षाओं के अनुसार धर्म एवं शासन चले हैं। महाभारत युद्ध में विद्वानों की क्षति तथा अव्यवस्था के कारण वेदों का सत्यस्वरूप सुरक्षित नहीं रहा। इस कारण देश एवं विश्व में अज्ञान फैल गया। इसी कारण से सर्वत्र अकर्तव्य एवं अज्ञान की स्थिति में मत–मतान्तरों की उत्पत्ति एवं प्रादुर्भाव हुआ। ऋषि दयानन्द के जीवन काल में भी देश एवं विश्व में अज्ञान, अंधविश्वास, मिथ्या परम्परायें तथा अविद्यायुक्त मत–मतान्तर प्रचलित थे। इनका स्वरूप आज की तुलना में अधिक जटिल था। ऋषि दयानन्द ने सत्य के अनुसंधान से सत्य वैदिक मान्यताओं एवं सिद्धान्तों सहित चार वेदों एवं वेदांगों का अध्ययन कर पूर्ण विद्या को प्राप्त किया था। उन्हें विदित हुआ कि संसार को सबसे अधिक आवश्यक अविद्या का नाश करने सहित विद्या का प्रचार एवं वृद्धि करने की है। इस उद्देश्य की पूर्ति में ही उन्होंने अपने जीवन को समर्पित किया जिससे देश देशान्तर में वेदों के सत्यस्वरूप, सत्य विद्याओं सहित ईश्वर, आत्मा तथा प्रकृति से जुड़े सत्य रहस्यों का प्रचार प्रसार हुआ। उनके इन प्रयासों से सारा विश्व लाभान्वित हुआ है। लोगों में ज्ञान ग्रहण करने एवं अपने हित एवं अहित के अनुसार उसे स्वीकार अस्वीकार करने की अलग अलग क्षमतायें हुआ करती हैं। अनेक विधर्मियों ने वेदमत को स्वीकार भी किया है। कुछ विधर्मी विद्वानों ने वेदों की प्रशंसा भी की है और भारतीय परम्परा के अनेक लोगों एवं विद्वानों ने शुद्ध वैदिक धर्म को स्वीकार भी किया है। स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, स्वामी दर्शनानन्द, लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द, पं. रामप्रसाद बिस्मिल आदि अनेक नाम हैं जिन्होंने ऋषि दयानन्द का शिष्यत्व प्राप्त कर वेदों का अध्ययन किया तथा उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में धारण कर दिग्दिगन्त प्रचार किया।

ऋषि दयानन्द के कार्य क्षेत्र में अवतीर्ण होने के अवसर पर सारा विश्व अन्धविश्वासों एवं पाखण्डों से ग्रस्त था। भारत में अविद्या एवं अन्धविश्वास कुछ अधिक ही थे। यहां पाषाण मूर्तिपूजा, अवतारवाद की धारणा, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, जन्मना जातिवाद आदि सामाजिक

कुप्रथायें एवं अनेकानेक अन्धविश्वास तथा पाखण्ड प्रचलित थे जिससे मानव समाज असंगठित होकर दुःखी एवं त्रस्त था। मानव मानव में ऊंच नीच की भावनायें तथा छुआ–छूत जैसी कुप्रथायें भी प्रचलित थीं। हिन्दुओं में बाल विवाह होते थे, विधवाओं को पुनर्विवाह का अधिकार नहीं था तथा विधवाओं को नारकीय जीवन व्यतीत करना पड़ता था। ऋषि दयानन्द ने जब वेद प्रचार का कार्य आरम्भ किया तो उन्हें सत्य को स्थापित करने के लिये सत्य वैदिक मान्यताओं के प्रचार सहित असत्य एवं अवैदिक मान्यताओं एवं परम्पराओं का खण्डन भी करना पड़ा। ऋषि दयानन्द की प्रत्येक बात तर्क एवं युक्ति सहित वेद के प्रमाणों तथा सृष्टिक्रम की अनुकूलता एवं अनुरूपता पर आधारित होती थी। ईश्वर एवं आत्मा का शुद्ध एवं सत्य स्वरूप विश्व में अज्ञात प्रायः था। ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना एवं उपासना की सत्य विधि एवं प्रणाली से भी लोग अनभिज्ञ थे। सबकी उपासना पद्धतियां अलग अलग तथा तर्क एवं युक्तियों पर आधारित नहीं थी। इस क्षेत्र में भी ऋषि दयानन्द ने वेदों की शिक्षा तथा महर्षि पतंजलि के योगदर्शन के आधार पर उपासना की सत्य एवं सार्थक उपासना पद्धति प्रदान की। इसके लिये उन्होंने 'पंचमहायज्ञविधि' एवं 'संस्कार–विधि' आदि ग्रन्थों का प्रणयन किया। उनके इस कार्य से देश देशान्तर में ईश्वर की सत्य उपासना विचार, चिन्तन एवं ध्यान–योग से युक्त उपासना पद्धति का आरम्भ हुआ।

ऋषि दयानन्द महाभारत के बाद इतिहास में प्रथम वेदज्ञ, ऋषि एवं महापुरुष हुए हैं जिन्होंने असत्य धार्मिक मान्यताओं एवं कुरीतियों का पुरजोर खण्डन किया। उन्होंने जानते हुए भी अपने प्राणों को खतरे में डाला परन्तु ईश्वर की आज्ञा तथा लोगों के हित को ध्यान में रखते हुए सत्य मान्यताओं, सिद्धान्तों एवं विद्या का निर्भीकतापूर्वक प्रचार किया। मूर्तिपूजा पर 16 नवम्बर 1869 को उनका काशी में देश के तीस से अधिक शीर्ष सनातनी विद्वानों से तथा लगभग पचास हजार लोगों की उपस्थिति में शास्त्रार्थ हुआ था। ऐसा शास्त्रार्थ महाभारत के बाद दूसरा नहीं हुआ। यह शास्त्रार्थ लिखित रूप में विद्यमान है। कोई भी व्यक्ति इसे पढ़कर स्वामी दयानन्द जी के वेदों पर आधारित वैदिक सिद्धान्तों की विजय का स्वयं ही आकंलन कर सकते हैं। ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन में सभी अन्धविश्वासों, मिथ्या मान्यताओं को दूर करने के लिये सप्रमाण खण्डन किया तथा अपने पक्ष में प्रचुर प्रमाण दिये। उन्होंने ही स्त्रियों एवं शूद्र बन्धुओं को यजुर्वेद का प्रमाण देकर वेदों के अध्ययन–अध्यापन का अधिकार दिया। विधवाओं को आपदधर्म के रूप में पुनर्विवाह का अधिकार भी दिया। उनके विचारों से ही समाज में गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित अन्तर्जातीय विवाह एवं स्वयंवर विवाह होना आरम्भ होने आरम्भ हुए। सरकारी नियमों में भी विवाह सबंधी आर्यसमाजों के अनेक विचारों को मान्यता मिली है। ऋषि दयानन्द के विचारों के प्रचार से ही समाज में जन्मना जातिवाद एवं छुआछूत को अनुचित एवं मानवता के विरुद्ध माना जाने लगा। यद्यपि आज भी प्रचार द्वारा इसका समूल उच्छेद आवश्यक है परन्तु ऋषि दयानन्द ने सुधार का जो मूल कार्य किया उससे वर्तमान समय में यह समस्या काफी सीमित हो गई है। इस प्रकार देश से अन्धविश्वास दूर करने सहित समाज सुधार का कार्य करने में ऋषि दयानन्द की प्रमुख एवं सर्वोपरि भूमिका तथा योगदान है। हम यह अनुभव करते हैं कि यदि ऋषि दयानन्द न आते तो अन्धविश्वास, पाखण्ड के खण्डन तथा समाज सुधार का जो अपूर्व कार्य ऋषि दयानन्द एवं उनके प्रतिनिधि संगठन आर्यसमाज ने किया है, वह कदापि न होता और आर्य वैदिक धर्म संस्कृति सुरक्षित न रहते।

ऋषि दयानन्द के समय में हमारा देश अंग्रेजों का दास, गुलाम एवं पराधीन था। देशवासियों पर अमानवीय अत्याचार, अन्याय तथा पक्षपातपूर्ण व्यवहार किया जाता था। देश की सम्पदा को लूट कर विदेश ले जाया जाता था। यहां के लोग अभावों तथा अनेक अव्यवस्थाओं में अपना जीवन व्यतीत करते एवं दुःख भोगते थे। देश को आजादी दिलाने की आवश्यकता थी। उनके समय 1824–1883 में देश की आजादी का न तो कहीं

कोई विचार करता था न ही कोई इस निमित्त संगठन ही स्थापित एवं कार्यरत था। ऐसी स्थिति में अपने प्राणों को जोखिम में डालकर ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ की रचना की और उसमें देश के लोगों की आत्माओं को ज्ञान प्राप्ति और उनके कर्तव्य एवं अधिकारों से परिचित कराया। उनके ग्रन्थों में स्वराज्य की कल्पना एवं स्वप्न लिया गया है। देश की आजादी का खुलकर समर्थन भी ऋषि दयानंद ने अपने सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के संशोधित संस्करण जो उन्होंने सन् 1883 में तैयार किया, प्रस्तुत किया है। सत्यार्थप्रकाश के आठवें समुल्लास में उनके शब्द हैं 'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत–मतान्तर के आग्रहरहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों (अंग्रेजों, यवनों एवं अन्यों) का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।'

इन पंक्तियों से पूर्व ऋषि दयानन्द ने लिखा है 'अब अभाग्योदय से और आर्यों (तत्कालीन हिन्दुओं) के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यों (वैदिक धर्मियों) का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों (मुख्यतः अंग्रेजों) के पादाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र हैं।' आजादी की प्रेरणा देने वाली उपुर्यक्त पंक्तियों के बाद भी उन्होंने महत्वपूर्ण शब्द लिखे हैं वह हैं 'परन्तु भिन्न–भिन्न भाषा, पृथक–पृथक शिक्षा, अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। विना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है। इसलिये जो कुछ वेदादि शास्त्रों में व्यवस्था वा इतिहास लिखे हैं उसी का मान्य करना भद्रपुरुषों (निष्पक्ष श्रेष्ठ पुरुषों) का काम (कर्तव्य) है।' ऐसी ही देश की आजादी की अनेक प्रेरणायें हमें ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों आर्याभिविनय, वेदभाष्य तथा संस्कृतवाक्यप्रबोध आदि ग्रन्थों में भी मिलती हैं।

अनेक विद्वानों का मानना है कि ऋषि दयानन्द के इन विचारों से ही देश को आजादी के आन्दोलन की प्रेरणा मिली। आजादी के गरम एवं नरम दल के प्रमुख नेता यथा पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा तथा महादेव गोविन्द रानाडे, पुणे महर्षि दयानन्द जी के ही शिष्य थे। गांधी जी का राजनीतिक गुरु पं. गोपाल कृष्ण गोखले को माना जाता है जो स्वयं महादेव गोविन्द रानाडे के शिष्य एवं उनके विचारों से प्रभावित थे। पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा जी ऋषि के साक्षात् शिष्यों में से एक थे। ऋषि दयानन्द ने सभी अन्धविश्वासों, पाखण्डों सहित सामाजिक अन्याय एवं शोषण के विरुद्ध आवाज बुलन्द की, उनका डटकर विरोध किया। उनके अनुयायियों ने भी ऐसा ही किया। समाज सुधार का जो कार्य उन्होंने किया, वैसा एवं उस मात्रा में वह कार्य अन्य किसी महापुरुष के द्वारा नहीं हुआ। देश की आजादी एवं स्वतन्त्रता का विचार देने के कारण ऋषि दयानन्द की अग्रणी प्रमुख भूमिका है। देश के नेताओं एवं विद्वानों निष्पक्ष होकर उनका उचित मूल्यांकन नहीं किया है। हम समझते हैं कि यदि ऋषि दयानन्द वेदप्रचार, अन्धविश्वास एवं पाखण्ड खण्डन सहित समाज सुधार के कार्य न करते और देश को आजादी का मन्त्र न देते, तो न तो देश स्वतन्त्र होता और न ही समाज का वर्तमान आधुनिक स्वरूप जो पाखण्ड एवं अन्धविश्वासों से काफी कुछ मुक्त है, देखने को न मिलता। ऋषि दयानन्द ने देश एवं मनुष्य समाज की उन्नति के वह सभी काम किये जो करणीय थे। उन्होंने ऐसा कोई काम नहीं किया जिससे देश एवं मनुष्यों की किसी प्रकार भी किंचित् हानि हो सकती थी। अपने धर्म प्रचार, समाज सुधार, अन्धविश्वास उन्मूलन, देशहित एवं मानव जाति की उन्नति के कार्यों के कारण ही वह अपने विरोधियों के षडयन्त्रों का शिकार हुए जिसका परिणाम दीपावली 30 अक्टूबर, 1883 को उनकी मृत्यु के रूप में हमारे सामने आया। यदि वह कुछ समय और जीवित रहते तो वैदिक धर्म एवं मानवता के उद्धार का कहीं अधिक कार्य करते। हम ऋषि दयानन्द को श्रद्धांजलि देते हैं। ओ३म् शम्।

–मनमोहन कुमार आर्य

देहरादून

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अन्तर्गत समस्त आर्य समाजों को निवेदित किया जाता है कि जिन संस्थाओं का वित्तवर्ष 2019–20 का दशांश, निश्चित् कोटि, आर्य मार्तण्ड शुल्क शेष है वे शीघ्र ही सभा के खाता संख्या 18830100010430 सीधे अथवा चेक द्वारा जमा करवाकर राजापार्क स्थित सभा कार्यालय को सूचित करें जिससे यथाशीघ्र सधन्यवाद प्राप्ति रसीद भिजवाई जा सके जिन संस्थाओं का विगत् 2 वर्ष से दशांश जमा नहीं हुआ है वे दो वर्ष का दशांश नियमानुसार भेज देवे।

सभा मंत्री

आवश्यक सूचना

आर्य मार्तण्ड पाक्षिक के सभी ग्राहकों को सूचित किया जाता है *कि जिन ग्राहकों का जो भी शुल्क* बकाया है। वे सभी सुधी पाठकगण बकाया शुल्क सभा कार्यालय में जमा करवाने या भिजवाने का श्रम करें ताकि हम आपकी पत्रिका समय पर *प्रेषित करते रहें।*

कार्यालय प्रभारी

उपवेशन सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की साधारण सभा के सभी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि विगत साधारण सभा दिनांक 24 नवम्बर 2019 के निर्णयानुसार तथा सभा प्रधान जी से प्राप्त सहमति के अनुसार साधारण सभा का उपवेशन दिनांक 29 मार्च 2020 रविवार 11:00 से 2:30 बजे तक सभा कार्यालय राजापार्क जयपुर में रखा गया था परन्तु कोरोना तालाबन्दी के कारण स्थगित होने से अग्रेशित किया गया है। यह उपवेशन आगामी दिनांक 8 नवम्बर 2020 को 11 से 2 बजे तक वैदिक गुरुकुल मलारना चौड़ (आश्रम) सवाई माधोपुर में खुले स्थान पर रखा गया है।

कृपया आवश्यक रूप से समय पर पधारकर संगठन के कार्य को मजबूत करने में अपना योगदान देंवे।

उपवेशन के विचारणीय बिन्दु :–

1. विगत कार्यवाही की सम्पुष्टि।
2. आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के कार्यवृत्त की प्रस्तुति एवं प्रगति।
3. सभा के प्रस्तावित संशोधित विधान के प्रस्ताव पर निर्णय।
4. वेद प्रचार कार्यक्रम पर विचार।
5. साधारण सभा के अगले उपवेशन पर विचार।
6. अन्य विषय प्रधान जी की अनुमति से।

आवश्यक संकेत– उपवेशन में कोरोना से बचाव के नियमों का पूर्णतया पालन करना आवश्यक होगा।

मंत्री

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में बोधोत्सव का आयोजन

आर्य जनों का यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन बुधवार, वीरवार, शुक्रवार 10,11 तथा 12 मार्च 2021 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप ये तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्यजनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास, एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी। अपने आने की पूर्व सूचना अवश्य भेजें अथवा व्हाट्स अप नं 9560688950 सन्देश द्वारा सूचना भेजें।

शुभकामानाऐं

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल तथा राष्ट्रीय शिक्षा एवं संस्कृति परिषद दिल्ली के तत्वावधान में अखिल भारतीय स्तर पर तार्किक ज्ञान विज्ञान वर्धिनी परीक्षा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 12 अगस्त से 20 सितम्बर 2020 तक चली इस राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिता में 17 राज्यों में भाग लिया। देशभर से लगभग तीन हजार स्त्री पुरुषों ने परीक्षा में ऑनलाइन भाग लिया। इस प्रतियोगिता में परीक्षा के कई स्तर बनाये गये थे। पाँच स्तरीय चयन के बाद अखिल भारतीय और राज्य स्तरीय शिरोमणियों का चयन हुआ। महिला वर्ग में अंजू राजवीर अहलावत, श्रेया रेया रेलन, पुरुष वर्ग में कृष्णपद ढाली व मनुदेव आर्य अखिल भारतीय शिरोमणि बने।

ममता आर्य (सवाई मधोपुर) को राजस्थान राज्य शिरोमणि व योगेश आर्य (सवाई मधोपुर) को राजस्थान विद्यार्थी शिरोमणि चुना गया।

स्वामी श्रद्धानन्द के शुद्धि आन्दोलन को आगे बढ़ाता आर्य समाज

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास जोधपुर के सहयोग से भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा (स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित) ने लगभग 700 मुस्लिम सदस्यों की सनातन वैदिक धर्म में वापसी करवाई। इस सन्दर्भ में यहाँ यह उल्लेख करना उचित होगा कि इससे पूर्व 50 परिवारों के 256 सदस्यों की मोतीसरा में घर वापसी हुई। 5 अगस्त को जिस दिन अयोध्या में राममन्दिर का शिलान्यास उसी दिन सभी लोगों के उत्साह से वैदिक सनातन धर्म को स्वीकार किया। इस कार्य में जोधपुर के स्थानीय आर्यजनों एवं विश्व हिन्दु परिषद के कार्यकर्ताओं का सक्रिय सहयोग मिला पदाधिकारियों का स्थानीय सम्पर्क, शुद्धि स्थल के स्थानीय लोगों के साथ कार्य करने का लाभ भी मिला।

इस सम्पूर्ण कार्य में आदरणीय मदनमोहन जी संरक्षक आर्यवीर दल की प्रेरणा एवं दर्शन ने विशेष कार्य किया। सभी शुद्धि कार्य मारवाड़ के विभिन्न स्थानों पर सम्पन्न हुए। विशेष कारण से इस सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी नहीं दी जा रही है।

अमित आर्य

विज्ञापन आमन्त्रित

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मुख पत्र आर्य मार्तण्ड पाक्षिक में आप विज्ञापन देकर लाभ उठा सकते हैं।

सम्पर्क कार्यालय
आर्य मार्तण्ड राजापार्क, जयपुर
सम्पर्क सूत्र – 0141–2621879

शोक सन्देश

आर्य समाज राजापार्क के प्रधान एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के पूर्व प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी का निधन विगत दिनों 10 अक्टूबर 2020 को उनके निजी आवास पर हो गया है। वे विगत कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे। उनका अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीति से दिनांक 11 अक्टूबर 2020 को प्रातः 10 बजे आदर्श नगर स्थित अन्त्येष्टि स्थल पर किया गया। श्री सामवेदी 84 वर्ष के थे, उन्होंने लम्बे समय तक आर्य समाज आदर्श नगर एवं अन्तर्गत संस्थाओं का संचालन किया। वे आर्य समाज की एकता के पक्षधर रहें, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के 2013 में निर्वाचन प्रस्तावित थे तो उन्होंने स्वामी सुमेधानन्द जी सहित राजस्थान के गणमान्य आर्यजनों को पत्र लिखकर कहा कि हम सभी वरिष्ठ जन संरक्षक की भूमिका में कार्य करें तथा सभा का संचालन योग्य विद्वान् युवा कार्यकर्ताओं का सौंप दे जिससे आर्य समाज के संगठनात्मक कार्यों को गति मिल सके। यद्यपि श्री सामवेदी जी भौतिक रूप से हमारे बीच में नहीं है तथापि आज वे हमारे मन में विद्यमान है।

उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि आज हम उनकी मानसिक भावनाओं का सम्मान करते हुए राजस्थान में आर्य समाज के कार्यों को गति दें, संगठनात्मक कार्य करते हुए एकरूपता स्थापित करें नेतृत्व को निश्चित् दिशा देते हुए आर्य समाज के समस्त साधन संसाधनों का प्रयोग वेद, आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द के आदर्शों को स्थापित करने में लगाने की दिशा में उनका सदुपयोग सुनिश्चित् करें। हम सभी आर्यजन परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को परमगति प्रदान करें।

शोक सन्देश

आर्य समाज नागौर जिले के कर्मठ कार्यकर्ता चौधरी किशनाराम आर्य का निधन दिनांक 14 अक्टूबर 2020 को उनके निवास स्थान बिल्लू में हो गया है। वे विगत दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। चौधरी किशनाराम जी आर्य ने सरकारी सेवा से सेवानिवृत्त होने के बाद अपने शेष सम्पूर्ण जीवन को आर्य समाज के प्रचार प्रसार हेतु समर्पित कर दिया था। उन्होंने स्वयं को आर्य समाज के कार्यकर्ता के रूप में स्थापित किया था। वे अहर्निश आर्य समाज के प्रचार कार्यों में व्यस्त रहते थे। सम्पूर्ण नागौर जिले में प्रचार कार्यक्रम बनवाना, परोपकारिणी सभा अजमेर, महर्षि दयानन्द स्मृति भवन जोधपुर, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान तथा वैदिक गुरुकुल आश्रम मलारना के कार्यक्रमों में सक्रियता से भाग लेते थे। इसके अतिरिक्त राजस्थान सहित देश के आर्य समाजों गुरुकुलों आदि में आयोजित होने वाले उत्सवों, आयोजनों में स्वयं सक्रियता से भाग लेते थे। साथ में अन्य परिचितों को प्रेरित कर कार्यक्रमों में ले जाते थे। चौधरी किशनाराम आर्य आज हमारे बीच में नहीं रहे तथापि उनका पुरुषार्थ हमें महर्षि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने हेतु निरन्तर उद्यमशील होने की प्रेरणा देता है। आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त सदस्य उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। ईश्वर उन्हें परमगति प्रदान करे।

यज्ञ मनुष्य और पर्यावरण दोनों के लिए फायदेमंद आर्य समाज ने साप्ताहिक देवयज्ञ में दी आहुतियाँ

आर्य समाज की ओर से रविवार को धन्नातलाई स्थित बैरवा समाज धर्मशाला में कोरोना गाइडलाइन के साथ साप्ताहिक देवयज्ञ और सत्संग का आयोजन किया गया। आर्य समाज के प्रधान सुखलाल आर्य और मंत्री रामरतन आर्य ने कहा कि यज्ञ मनुष्य और पर्यावरण दोनों की फायदेमंद होते हैं, क्योंकि यज्ञ में शामिल होने से मनुष्य के व्यवहार और आहुतियों से निकलने वाली ऊष्मा (ऊर्जा) पर्यावरण की शुद्धि में सहायक हैं। उन्होंने कहा है कि आर्य समाज का प्रमुख उद्देश्य संसार में उपकार करना यानि शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना है।

सुखलाल जी आर्य, टोंक

राजस्थान में आयोजित हुआ शुद्धि कार्यक्रम

आर्य समाज सराधना, अजमेर में

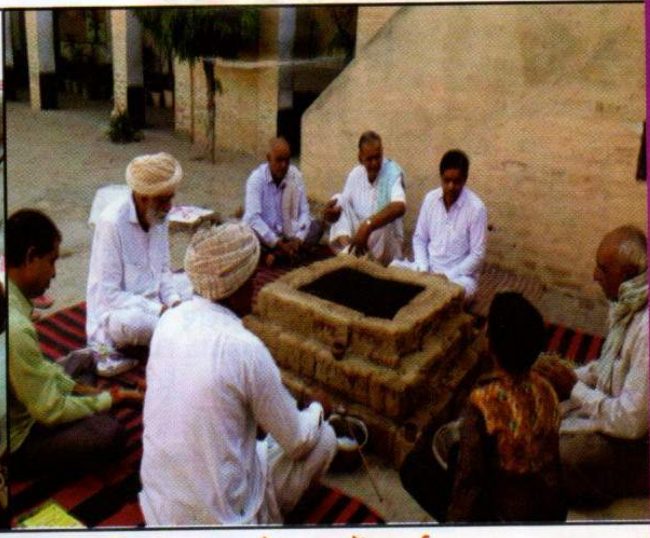

आर्य समाज बजाजा बाजार अलवर एवं छानीबड़ी गंगानगर में यज्ञ में आर्यजन

आर्य समाज हिरणमगरी उयपुर के सदस्यों ने किया आचार्य सत्यजित् जी का स्वागत

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / 214 / 2020-22 आर. एन. आई नं.10471/60

प्रेषकः-
सम्पादक,
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
हनुमान ढाबे के पास, राजा पार्क,
जयपुर-302004

प्रेषित

टिकट